अंग्रेज़ी माध्यम में शिक्षा की समस्या

डॉ. सुशील जोशी

गतिविधि आधारित (बच्चों की सक्रियता पर आधारित) शिक्षा का मतलब यह होगा कि कक्षा का व्यापार काफी हद तक पाठ्यपुस्तकों की बजाय बच्चों पर निर्भर रहेगा। बच्चों को प्रयोग करके अपने अवलोकन व्यक्त करने होंगे, कभी-कभी लिखने होंगे, फिर उन पर चर्चा होगी और संभवतः बच्चे स्वयं निष्कर्ष निकालेंगे। यदि पूरा वार्तालाप अंग्रेज़ी में हो तो बच्चों के अवलोकन कैसे व्यक्त होंगे। और फिर चर्चा में उनकी भागीदारी कैसे होगी? सीखने में बच्चों की सक्रियता के संदर्भ में माध्यम का बहुत महत्व है।

हाल ही में मैं विज्ञान शिक्षकों के एक प्रशिक्षण में शामिल हुआ था। विज्ञान शिक्षा में रुचि के चलते मैं प्रायः ऐसे प्रशिक्षणों में भाग लेता हूं। यह प्रशिक्षण मुख्यतः इस बात को लेकर था कि पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तकें तथा परीक्षा के मौजूदा हालात में शिक्षक अपनी-अपनी कक्षा में गतिविधियों के आधार पर शिक्षण कैसे कर सकते हैं। यानी सारे प्रमुख सवाल सामने थे। पूरा पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकें तो जानकारी देने व उसे रटने पर ज़ोर देते हैं और रही-सही कसर उनकी वह परीक्षा पूरी कर देती है जिसमें रटी हुई जानकारी को उगलना ही सफलता की कुंजी है। बहरहाल, ये मुद्दे तो शाश्वत हैं मगर इस प्रशिक्षण में मेरा सामना एक अन्य मुद्दे से हुआ।

प्रशिक्षण में सारे शिक्षक अंग्रेज़ी माध्यम स्कूलों के थे। लाज़मी था कि प्रशिक्षण अंग्रेज़ी में हो रहा था। मैं उस दिन मिश्रणों में से पदार्थों को अलग-अलग करने यानी पृथक्करण से सम्बंधित अध्याय करवा रहा था। इरादा यह था कि पहले हम आम जीवन में उपयोगी पृथक्करण की विधियों पर चर्चा करेंगे और फिर 'वैज्ञानिक विधियों' का अभ्यास करेंगे। मेरा विश्वास है कि क्रोमेटोग्राफी का अपवाद छोड़कर पृथक्करण की सारी 'वैज्ञानिक' विधियां रोज़मर्रा की विधियों के परिष्कृत रूप हैं।

तो, मैंने शिक्षकों से पूछा कि वे दैनिक जीवन में पदार्थों को अलग-अलग करने की किन विधियों का उपयोग करते हैं। गौरतलब है कि शिक्षकों में लगभग 75 फीसदी महिलाएं थीं। थोड़ी हिचक के बाद एक शिक्षक ने कहा, "चुम्बकीय विधि"। इसके बाद तो तांता लग गया - आसवन, भारण, अपकेंद्रण, उर्ध्वपातन,...। मैं चकित था। मैंने उन्हें याद दिलाया कि हम 'दैनिक जीवन' की विधियों की बात कर रहे हैं। अलबत्ता उन पर इसका कोई असर न हुआ और वे किताबी विधियां बताते चले गए।

इस पर मैंने सोचा कि शायद एकाध विधि बताकर उनकी मदद करना चाहिए। तो, मैंने पूछा कि आप राई और कंकड़ कैसे अलग-अलग करते हैं। एक शिक्षिका ने हाथ से इशारा करके बताया - ऐसे करते हैं। मैंने उन्हें बताया कि उस क्रिया को परेरना या रोलना कहते हैं। फिर मैंने पूछा कि यह विधि उन्होंने पहले क्यों नहीं बताई। उनका कहना था कि इसका अंग्रेज़ी नाम नहीं मालूम, इसलिए नहीं बताई।

यह एक झटका था। मेरे सामने बैठे ये लगभग 20-25 शिक्षक कक्षा में सिर्फ इतना ही बता सकते हैं जिसे वे अंग्रेज़ी में कह सकें। यानी इस परिस्थिति में ज्ञान मात्र वही है जिसे अंग्रेज़ी में बयान किया जा सके। इसका मतलब यह भी हुआ कि यह ज्ञान मात्र किताबी ही होगा। कक्षा के बाहर आप जो कुछ जानते हैं उसे कक्षा के बाहर ही रखने का यह अच्छा तरीका है।

खैर, हमने धीरे-धीरे शिक्षकों को मना लिया कि चाहे स्कूल में माध्यम अंग्रेज़ी हो मगर प्रशिक्षण में हम मिली-जुली सहज भाषा का उपयोग करेंगे। मगर मैं यही सोचता रहा कि जब शिक्षक अंग्रेज़ी माध्यम के सामने

इतने असहाय महसूस करते हैं, तो बच्चों की क्या हालत होगी। और मेरी बात की पुष्टि होते देर नहीं लगी।

खासकर यह मुद्दा काफी ज़ोर से सामने आया कि गतिविधि आधारित (बच्चों की सक्रियता पर आधारित) शिक्षा का मतलब यह होगा कि कक्षा का व्यापार काफी हद तक पाठ्यपुस्तकों की बजाय बच्चों पर निर्भर रहेगा। बच्चों को प्रयोग करके अपने अवलोकन व्यक्त करने होंगे, कभी-कभी लिखने होंगे, फिर उन पर चर्चा होगी और संभवतः बच्चे स्वयं निष्कर्ष निकालेंगे। अब गतिविधि आधारित शिक्षा के नए-नए पहलू सामने आने लगे। यह भी स्पष्ट होने लगा कि यदि पूरा वार्तालाप अंग्रेज़ी में होगा तो बच्चों के अवलोकन कैसे व्यक्त होंगे। और फिर चर्चा में उनकी भागीदारी कैसे होगी? पता नहीं शिक्षकों को यह बात स्पष्ट हुई या नहीं कि सीखने में बच्चों की सक्रियता के संदर्भ में माध्यम का बहुत महत्व है।

एक उदाहरण मेरे ज़ेहन में आ रहा है। एक शिक्षक बच्चों को 'बीजों का प्रकीर्णन' पढ़ा रहे थे। प्रकीर्णन का मतलब होता है बिखरना। वनस्पतियों के बीज दूर-दूर तक बिखरें, यह उनके अस्तित्व के लिए ज़रूरी है। बीजों को बिखरने में मदद देने के लिए कई व्यवस्थाएं प्रकृति में हैं। कुछ बीज इतने हल्के होते हैं कि हवा में आसानी से उड़ते हैं, कुछ बीज जानवरों पर चिपक जाते हैं, वगैरह। पीपल, गूलर वगैरह के बीज पक्षियों द्वारा बिखेरे जाते हैं। कुछ बीज ऐसे भी हैं जिन्हें पक्षी खाकर अपनी बीट के साथ निकालें तभी उनका अंकुरण होगा। शिक्षक के पूछने पर एक बच्चे ने बताया, "गुरुजी चिड़िया हगत है।" वे शिक्षक बहुत अच्छे थे कि उन्होंने इस 'अश्लील' जवाब को सही माना और चर्चा को आगे बढ़ाया। यदि शुद्ध हिन्दी पर ज़ोर देते तो शायद इस बच्चे का ज्ञान अज्ञान ही रहता।

फिलहाल प्रशिक्षण पर लौटें। अंत में मामला परीक्षा पर आया। शिक्षकों से कहा गया कि वे इस नई गतिविधि आधारित विधि के अनुरूप परीक्षा प्रश्न बनाएं। यह भी कहा गया कि चूंकि रटी हुई जानकारी उगलवाना हमारा उद्देश्य नहीं होगा, इसलिए परीक्षा में बच्चों को अपनी किताब लाने व देखने की छूट होगी यानी ओपन-बुक परीक्षा होगी। लगभग आधे घण्टे की मशक्कत के बाद शिक्षकों ने जो सवाल बनाए वे घटिया थे - उनकी दिक्कत भी साफ थी। उनका स्पष्ट मत था कि वस्तुनिष्ठ प्रश्नों का अर्थ नहीं होता क्योंकि जल्दी ही परीक्षा कक्ष में बैठे सारे छात्रों को उनके जवाब संप्रेषित हो जाते हैं। मगर यदि वस्तुनिष्ठ न पूछें तो क्या पूछें। उनका अनुभव था कि जब वे किताब से ही प्रश्न पूछते हैं (जिनके उत्तर किताब में ही मिल जाते हैं) तब भी बच्चे लिख नहीं पाते। यदि एकदम नए प्रश्न पूछे गए तो वे क्या करेंगे। उन्होंने यह भी बताया कि कई बार बच्चे वैसे पूछने पर उत्तर बता देते हैं मगर लिखने को कहा जाए तो लिख नहीं पाते।

अब यह बहु आयामी समस्या है। एक तो किताब से अलग कोई सार्थक सवाल बनाने में शिक्षक कठिनाई महसूस करते हैं - शायद अंग्रेज़ी के कारण यह कठिनाई और बढ़ जाती है। इसलिए वे किताब के सवाल टीप देने में ही भलाई समझते हैं। फिर वे यह भी जानते हैं कि बच्चों की भाषा कमज़ोर है - इसलिए बेहतर यही है कि उनसे कुछ मौलिक न पूछा जाए। और साल भर तो बच्चों को कुछ कहने का मौका मिला नहीं था, अचानक परीक्षा में ऐसा किया तो डब्बा गोल हो जाएगा।

चूंकि परीक्षा में अध्याय के अंत में दिए सवाल ही आएंगे, इसलिए साल भर की शिक्षा इन्हीं सवालों के इर्द-गिर्द मंडराती है।

शिक्षकों ने यह भी बताया कि विकल्प होने के बावजूद माता-पिता अपने बच्चे को हिन्दी माध्यम से नहीं पढ़ाना चाहते। इसमें एक सवाल स्टेटस का भी होता है।

वर्तमान शिक्षा में वैसे तो पूरा ज़ोर रटने पर है मगर मैं सिर्फ इतना कहना चाहता हूं कि अंग्रेज़ी माध्यम ने इसे और विकृत किया है। मेरा यह आग्रह नहीं है कि माध्यम बदल देने से ही सारी समस्या हल हो जाएगी। ***(स्रोत विशेष फीचर्स)***